



Monika Suthar

30 May 2009

05:30 PM

Sirohi

Model: Web-MyKundli

Order No: 120342601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 30/05/2009
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 17:30:00 घंटे
इष्ट _____: 29:17:14 घटी
स्थान _____: Sirohi
राज्य _____: Rajasthan
देश _____: India

अक्षांश _____: 25:53:00 उत्तर
रेखांश _____: 72:58:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:38:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 16:51:52 घंटे
वेलान्तर _____: 00:02:28 घंटे
साम्पातिक काल _____: 09:24:23 घंटे
सूर्योदय _____: 05:47:06 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:24:28 घंटे
दिनमान _____: 13:37:22 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 15:13:16 वृष
लग्न के अंश _____: 21:20:42 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: सिंह - सूर्य
नक्षत्र-चरण _____: मघा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: व्याघात
करण _____: वणिज
गण _____: राक्षस
योनि _____: मूषक
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: वनचर
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: मू-मुक्ता
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मिथुन

Astro Ranveer Pratapji Rajpurohit

At. Post fungani Dist. Sirohi (Raj)

7568311880

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1931	ज्येष्ठ	9
पंजाबी	संवत : 2066	ज्येष्ठ	17
बंगाली	सन् : 1416	ज्येष्ठ	16
तमिल	संवत : 2066	वैकासी	16
केरल	कोल्लम : 1184	इदवम	16
नेपाली	संवत : 2066	ज्येष्ठ	17
चैत्रादि	संवत : 2066	ज्येष्ठ	शुक्ल 7
कार्तिकादि	संवत : 2066	ज्येष्ठ	शुक्ल 7

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 7
तिथि समाप्ति काल _____ : 21:37:55
जन्म तिथि _____ : 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : मघा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 28:29:46 घंटे
जन्म योग _____ : मघा
सूर्योदय कालीन योग _____ : व्याघात
योग समाप्ति काल _____ : 19:18:04 घंटे
जन्म योग _____ : व्याघात
सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
करण समाप्ति काल _____ : 10:31:08 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 30:02:35
भभोग _____ : 57:32:00
भोग्य दशा काल _____ : केतु 3 वर्ष 3 मा 27 दि

घात चक्र

मास _____ : ज्येष्ठ
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : मूल
योग _____ : धृति
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मार्जार
लग्न _____ : मीन
सूर्य _____ : धनु
चन्द्र _____ : वृश्चिक
मंगल _____ : मकर
बुध _____ : तुला
गुरु _____ : कुम्भ
शुक्र _____ : मीन
शनि _____ : वृश्चिक
राहु _____ : मेष

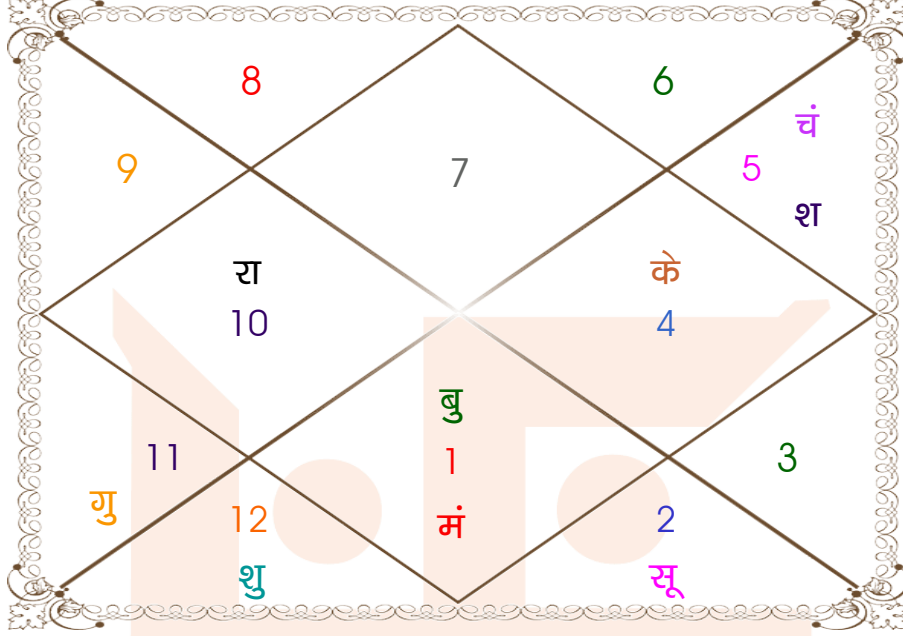
Astro Ranveer Pratapji Rajpurohit

At. Post fungani Dist. Sirohi (Raj)

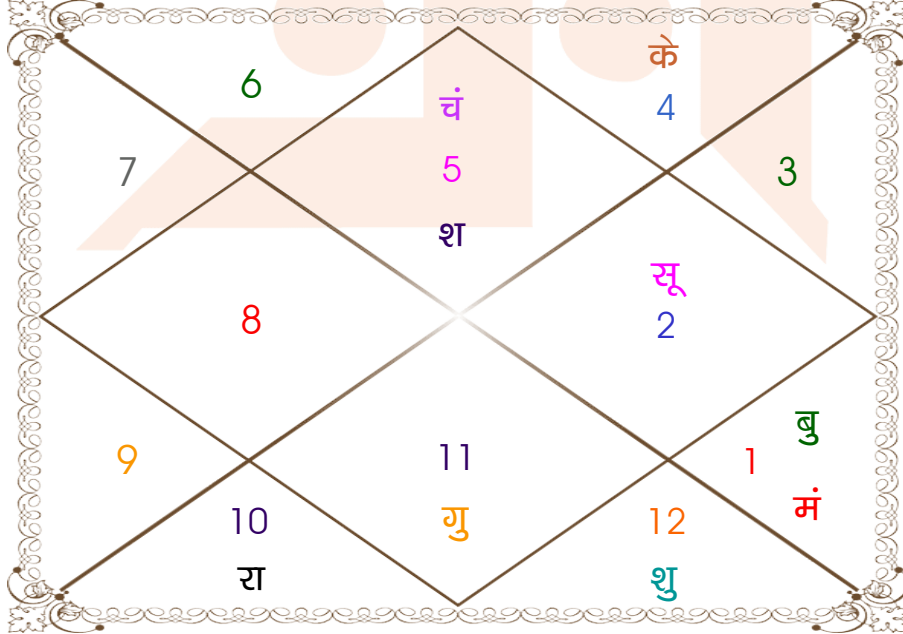
7568311880

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



Astro Ranveer Pratapji Rajpurohit

At. Post fungani Dist. Sirohi (Raj)

7568311880

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

शु	बु मं	सू	
गु			के
रा			श चं
		ल	

लग्न कुंडली

सू	बु मं	शु
के		गु
चं श		रा
	ल	

विंशोत्तरी
केतु 3वर्ष 3मा 27दि
केतु

30/05/2009

27/09/2125

केतु	26/09/2012
शुक्र	26/09/2032
सूर्य	27/09/2038
चन्द्र	26/09/2048
मंगल	27/09/2055
राहु	26/09/2073
गुरु	26/09/2089
शनि	27/09/2108
बुध	27/09/2125

योगिनी
भद्रिका 2वर्ष 4मा 15दि
संकटा

14/10/2024

14/10/2032

संकटा	26/07/2026
मंगला	15/10/2026
पिंगला	26/03/2027
धान्या	25/11/2027
भ्रामरी	14/10/2028
भद्रिका	24/11/2029
उल्का	26/03/2031
सिद्धा	14/10/2032

Astro Ranveer Pratapji Rajpurohit

At. Post fungani Dist. Sirohi (Raj)

7568311880

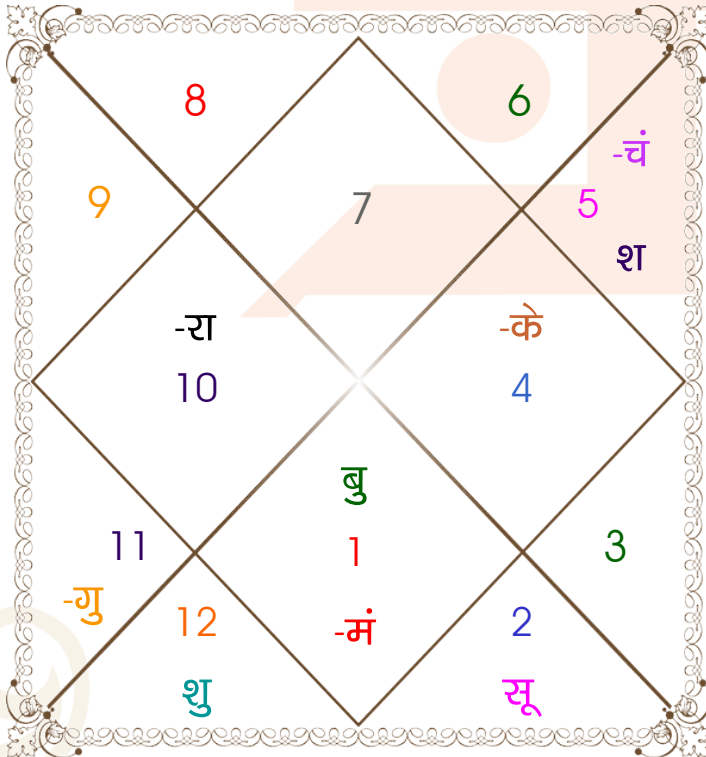
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	21:20:42	313:07:51	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	---
सूर्य			वृष	15:13:16	00:57:32	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	शत्रु राशि
चंद्र			सिंह	06:59:53	13:53:53	मघा	3	10	सूर्य	केतु	राहु	मित्र राशि
मंगल			मेष	04:58:07	00:44:58	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	मंगल	मूलत्रिकोण
बुध	व	अ	मेष	28:53:15	00:02:28	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	मंगल	सम राशि
गुरु			कुंभ	02:37:41	00:02:59	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	केतु	सम राशि
शुक्र			मीन	29:33:40	00:54:36	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	उच्च राशि
शनि			सिंह	21:04:31	00:01:23	पूर्वाषाढा	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि
राहु			मकर	07:35:57	00:00:39	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	मित्र राशि
केतु			कर्क	07:35:57	00:00:39	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	केतु	मित्र राशि
हर्ष			मीन	02:13:29	00:01:30	पूर्वाभाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	---
नेप	व		कुंभ	02:29:06	00:00:03	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	केतु	---
प्लूटो	व		धनु	08:35:08	00:01:23	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	---
दशम भाव			कर्क	24:40:40	--	आश्लेषा	--	9	चंद्र	बुध	राहु	--

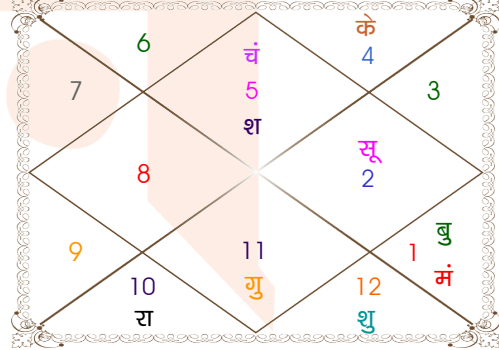
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:59:32

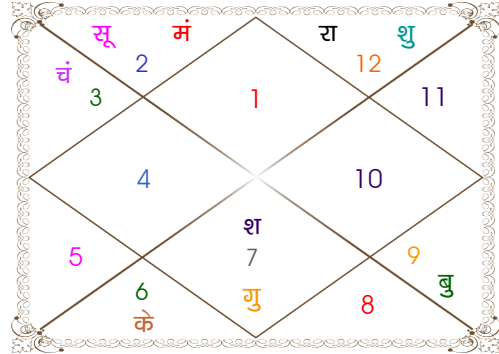
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Astro Ranveer Pratapji Rajpurohit

At. Post fungani Dist. Sirohi (Raj)

7568311880

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	तुला 06:54:02	तुला 21:20:42
2	वृश्चिक 06:54:02	वृश्चिक 22:27:21
3	धनु 08:00:41	धनु 23:34:00
4	मकर 09:07:20	मकर 24:40:40
5	कुम्भ 09:07:20	कुम्भ 23:34:00
6	मीन 08:00:41	मीन 22:27:21
7	मेष 06:54:02	मेष 21:20:42
8	वृष 06:54:02	वृष 22:27:21
9	मिथुन 08:00:41	मिथुन 23:34:00
10	कर्क 09:07:20	कर्क 24:40:40
11	सिंह 09:07:20	सिंह 23:34:00
12	कन्या 08:00:41	कन्या 22:27:21

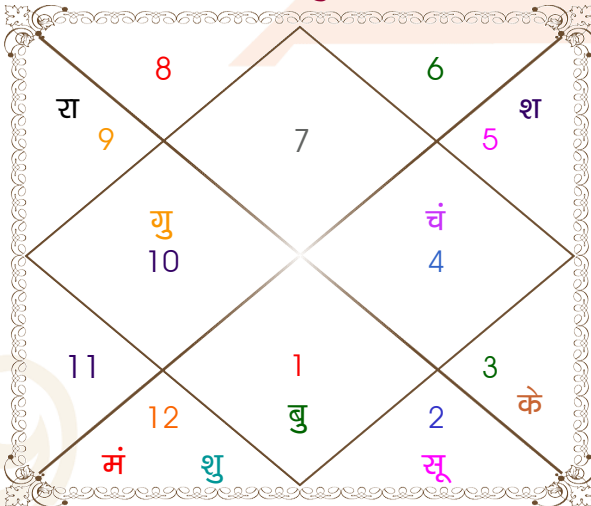
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	21:20:42
2	वृश्चिक	20:39:48
3	धनु	21:53:50
4	मकर	24:40:40
5	कुम्भ	26:57:13
6	मीन	26:05:26
7	मेष	21:20:42
8	वृष	20:39:48
9	मिथुन	21:53:50
10	कर्क	24:40:40
11	सिंह	26:57:13
12	कन्या	26:05:26

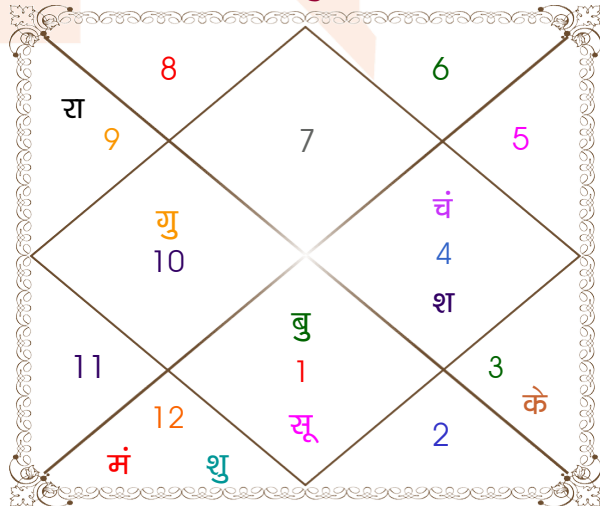
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Astro Ranveer Pratapji Rajpurohit

At. Post fungani Dist. Sirohi (Raj)

7568311880

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 3 वर्ष 3 मास 27 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
30/05/2009	26/09/2012	26/09/2032	27/09/2038	26/09/2048
26/09/2012	26/09/2032	27/09/2038	26/09/2048	27/09/2055
00/00/0000	शुक्र 27/01/2016	सूर्य 14/01/2033	चंद्र 28/07/2039	मंगल 22/02/2049
00/00/0000	सूर्य 26/01/2017	चंद्र 15/07/2033	मंगल 26/02/2040	राहु 13/03/2050
00/00/0000	चंद्र 27/09/2018	मंगल 20/11/2033	राहु 27/08/2041	गुरु 17/02/2051
00/00/0000	मंगल 27/11/2019	राहु 15/10/2034	गुरु 27/12/2042	शनि 27/03/2052
30/05/2009	राहु 26/11/2022	गुरु 03/08/2035	शनि 27/07/2044	बुध 25/03/2053
राहु 14/09/2009	गुरु 27/07/2025	शनि 15/07/2036	बुध 27/12/2045	केतु 21/08/2053
गुरु 21/08/2010	शनि 26/09/2028	बुध 21/05/2037	केतु 28/07/2046	शुक्र 21/10/2054
शनि 30/09/2011	बुध 28/07/2031	केतु 26/09/2037	शुक्र 27/03/2048	सूर्य 26/02/2055
बुध 26/09/2012	केतु 26/09/2032	शुक्र 27/09/2038	सूर्य 26/09/2048	चंद्र 27/09/2055

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
27/09/2055	26/09/2073	26/09/2089	27/09/2108	27/09/2125
26/09/2073	26/09/2089	27/09/2108	27/09/2125	00/00/0000
राहु 09/06/2058	गुरु 15/11/2075	शनि 29/09/2092	बुध 24/02/2111	केतु 23/02/2126
गुरु 02/11/2060	शनि 28/05/2078	बुध 09/06/2095	केतु 21/02/2112	शुक्र 26/04/2127
शनि 09/09/2063	बुध 02/09/2080	केतु 18/07/2096	शुक्र 22/12/2114	सूर्य 31/08/2127
बुध 28/03/2066	केतु 09/08/2081	शुक्र 18/09/2099	सूर्य 28/10/2115	चंद्र 31/03/2128
केतु 15/04/2067	शुक्र 09/04/2084	सूर्य 31/08/2100	चंद्र 29/03/2117	मंगल 28/08/2128
शुक्र 15/04/2070	सूर्य 26/01/2085	चंद्र 01/04/2102	मंगल 26/03/2118	राहु 31/05/2129
सूर्य 10/03/2071	चंद्र 28/05/2086	मंगल 11/05/2103	राहु 12/10/2120	00/00/0000
चंद्र 08/09/2072	मंगल 04/05/2087	राहु 17/03/2106	गुरु 18/01/2123	00/00/0000
मंगल 26/09/2073	राहु 26/09/2089	गुरु 27/09/2108	शनि 27/09/2125	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 3 वर्ष 4 मा 4 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Astro Ranveer Pratapji Rajpurohit

At. Post fungani Dist. Sirohi (Raj)

7568311880

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शनि 27/07/2025 26/09/2028	शुक्र - बुध 26/09/2028 28/07/2031	शुक्र - केतु 28/07/2031 26/09/2032	सूर्य - सूर्य 26/09/2032 14/01/2033	सूर्य - चंद्र 14/01/2033 15/07/2033
शनि 27/01/2026 बुध 09/07/2026 केतु 15/09/2026 शुक्र 27/03/2027 सूर्य 23/05/2027 चंद्र 28/08/2027 मंगल 03/11/2027 राहु 25/04/2028 गुरु 26/09/2028	बुध 20/02/2029 केतु 21/04/2029 शुक्र 11/10/2029 सूर्य 01/12/2029 चंद्र 25/02/2030 मंगल 27/04/2030 राहु 29/09/2030 गुरु 14/02/2031 शनि 28/07/2031	केतु 22/08/2031 शुक्र 01/11/2031 सूर्य 22/11/2031 चंद्र 28/12/2031 मंगल 21/01/2032 राहु 25/03/2032 गुरु 21/05/2032 शनि 28/07/2032 बुध 26/09/2032	सूर्य 02/10/2032 चंद्र 11/10/2032 मंगल 17/10/2032 राहु 02/11/2032 गुरु 17/11/2032 शनि 04/12/2032 बुध 20/12/2032 केतु 26/12/2032 शुक्र 14/01/2033	चंद्र 29/01/2033 मंगल 09/02/2033 राहु 08/03/2033 गुरु 01/04/2033 शनि 30/04/2033 बुध 26/05/2033 केतु 06/06/2033 शुक्र 06/07/2033 सूर्य 15/07/2033
सूर्य - मंगल 15/07/2033 20/11/2033	सूर्य - राहु 20/11/2033 15/10/2034	सूर्य - गुरु 15/10/2034 03/08/2035	सूर्य - शनि 03/08/2035 15/07/2036	सूर्य - बुध 15/07/2036 21/05/2037
मंगल 23/07/2033 राहु 11/08/2033 गुरु 28/08/2033 शनि 17/09/2033 बुध 05/10/2033 केतु 13/10/2033 शुक्र 03/11/2033 सूर्य 09/11/2033 चंद्र 20/11/2033	राहु 08/01/2034 गुरु 21/02/2034 शनि 14/04/2034 बुध 31/05/2034 केतु 19/06/2034 शुक्र 13/08/2034 सूर्य 29/08/2034 चंद्र 26/09/2034 मंगल 15/10/2034	गुरु 23/11/2034 शनि 08/01/2035 बुध 18/02/2035 केतु 07/03/2035 शुक्र 25/04/2035 सूर्य 10/05/2035 चंद्र 03/06/2035 मंगल 20/06/2035 राहु 03/08/2035	शनि 27/09/2035 बुध 15/11/2035 केतु 05/12/2035 शुक्र 01/02/2036 सूर्य 19/02/2036 चंद्र 18/03/2036 मंगल 08/04/2036 राहु 30/05/2036 गुरु 15/07/2036	बुध 28/08/2036 केतु 15/09/2036 शुक्र 06/11/2036 सूर्य 21/11/2036 चंद्र 17/12/2036 मंगल 04/01/2037 राहु 20/02/2037 गुरु 02/04/2037 शनि 21/05/2037
सूर्य - केतु 21/05/2037 26/09/2037	सूर्य - शुक्र 26/09/2037 27/09/2038	चंद्र - चंद्र 27/09/2038 28/07/2039	चंद्र - मंगल 28/07/2039 26/02/2040	चंद्र - राहु 26/02/2040 27/08/2041
केतु 29/05/2037 शुक्र 19/06/2037 सूर्य 26/06/2037 चंद्र 06/07/2037 मंगल 14/07/2037 राहु 02/08/2037 गुरु 19/08/2037 शनि 08/09/2037 बुध 26/09/2037	शुक्र 26/11/2037 सूर्य 14/12/2037 चंद्र 14/01/2038 मंगल 04/02/2038 राहु 31/03/2038 गुरु 19/05/2038 शनि 16/07/2038 बुध 05/09/2038 केतु 27/09/2038	चंद्र 22/10/2038 मंगल 09/11/2038 राहु 24/12/2038 गुरु 03/02/2039 शनि 23/03/2039 बुध 05/05/2039 केतु 23/05/2039 शुक्र 13/07/2039 सूर्य 28/07/2039	मंगल 09/08/2039 राहु 10/09/2039 गुरु 09/10/2039 शनि 11/11/2039 बुध 12/12/2039 केतु 24/12/2039 शुक्र 29/01/2040 सूर्य 08/02/2040 चंद्र 26/02/2040	राहु 18/05/2040 गुरु 30/07/2040 शनि 25/10/2040 बुध 11/01/2041 केतु 12/02/2041 शुक्र 14/05/2041 सूर्य 10/06/2041 चंद्र 26/07/2041 मंगल 27/08/2041

Astro Ranveer Pratapji Rajpurohit

At. Post fungani Dist. Sirohi (Raj)

7568311880

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	1
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 1
शत्रु अंक	4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

Astro Ranveer Pratapji Rajpurohit

At. Post fungani Dist. Sirohi (Raj)

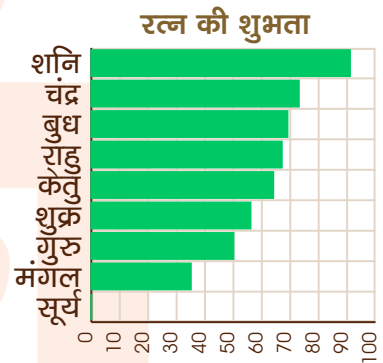
7568311880

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	91%	धनार्जन, सुख, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	73%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	69%	दम्पति, भाग्योदय, कम खर्च
गोमेद	राहु	67%	सुख, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	64%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
हीरा	शुक्र	56%	शत्रु व रोग मुक्ति, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	50%	सन्तति सुख, पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति
मूंगा	मंगल	35%	दाम्पत्य कष्ट, धन हानि
माणिक्य	सूर्य	0%	दुर्घटना, हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	26/09/2012	0%	61%	47%	69%	50%	62%	78%	55%	77%
शुक्र	26/09/2032	0%	61%	35%	75%	50%	69%	97%	73%	70%
सूर्य	27/09/2038	22%	80%	47%	69%	56%	38%	78%	55%	52%
चंद्र	26/09/2048	9%	86%	35%	75%	50%	56%	91%	55%	52%
मंगल	27/09/2055	9%	80%	55%	56%	56%	56%	91%	55%	70%
राहु	26/09/2073	0%	61%	10%	69%	50%	62%	97%	80%	52%
गुरु	26/09/2089	9%	80%	47%	56%	62%	38%	91%	67%	64%
शनि	27/09/2108	0%	61%	10%	75%	50%	62%	100%	73%	52%
बुध	27/09/2125	9%	61%	35%	81%	50%	62%	91%	67%	64%

Astro Ranveer Pratapji Rajpurohit

At. Post fungani Dist. Sirohi (Raj)

7568311880

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढेसाती द्वितीय ढैया	30/05/2009-10/09/2009	-----	-----
साढेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
साढेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया

फल

सम
अशुभ
अशुभ
शुभ
सम

क्षेत्र

अल्प बचत
कम खर्च
धन
शत्रु व रोग
व्यावसायिक परेशानी

Astro Ranveer Pratapji Rajpurohit

At. Post fungani Dist. Sirohi (Raj)

7568311880

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपके पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होंगे तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अन्त में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्य दोषों से आपको परेशानी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगी तथा समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा तथा यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके

सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



Astro Ranveer Pratapji Rajpurohit

At. Post fungani Dist. Sirohi (Raj)

7568311880

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

Astro Ranveer Pratapji Rajpurohit

At. Post fungani Dist. Sirohi (Raj)

7568311880

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी।

आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यो एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

बुध

सातवें भाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

मेष राशि में बुध हो तो जातक चतुर, प्रेमी, सत्यप्रिय, नट, रतिप्रिय कृशदेही, लेखक, ऋणी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान् परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान्, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, कोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं क्रूर होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एवं दाँत रोगी होता है।

केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीड़ित एवं दुःखी होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- शुक्र
(26/09/2012 - 26/09/2032)**

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 26/09/2012 को आरम्भ होकर 26/09/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो भावनात्मक आनन्द, अच्छे स्वाद, मनोरंजन और सुखमय जीवन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह मीन राशि में उच्च का जबकि कन्या में निम्न का होता है। आपकी जन्म कुण्डली में यह षष्ठ भाव में स्थित होकर द्वादश भाव को देख रहा है और इस भाव पर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् षष्ठ भाव, बीमारी, नौकरी, कर्मचारी, ऋण, शत्रु, मामा, कंजूसी तथा व्यथा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है और इस भाव को प्रबलित का रहा है। अतः इस दशा काल में आपको कोई दुर्घटना या बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी तथा आप अपना जीवन सामान्य रूप से व्यतीत करेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है जो आपकी वित्तीय स्थिति में सुधार लाएगा। आप मुकदमे से संपत्ति बना सकते हैं। आप आरामदेह जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

व्यवसाय :

इस दशा काल में आप दिन-प्रतिदिन के व्यवसाय के लिए कोई नर्सिंग होम आरंभ कर सकते हैं। आप आरामदेह जीवन का आनन्द ले सकेंगे। आपके मामा आपके व्यवसाय में सहायक हो सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

शुक्र षष्ठ भाव में स्त्री का अनुग्रह प्राप्त करने में अनुकूल है। आप इस दशा काल में अत्यंत स्त्री सुख प्राप्त करेंगे। आप इस तरह स्वेच्छाचरी हो जाएँगे और स्त्री के लिए कमजोरी अनुभव करेंगे जो निस्संदेह आपका पक्ष लेगी और आपके जीवन में सहायक होगी। किन्तु इसका आपके पारिवारिक जीवन पर असर पड़ेगा तथा उसे कुछ अव्यवस्थित करेगा। आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे।

**अंतर्दशा :- शुक्र - गुरु
(26/11/2022 - 27/07/2025)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 26/09/2012 को आरंभ हुई थी और 26/09/2032 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 26/11/2022 को प्रारंभ होकर 27/07/2025 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 9, 11 और लग्न भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विधि और तर्कशास्त्र के विद्वान हो सकते हैं, बुद्धिमान होंगे, तर्कशास्त्र के विद्वान हो सकते हैं, बुद्धिमान होंगे, किसी प्रशासक के सलाहकार हो सकते हैं या धर्मप्रचारक हो सकते हैं। वाहन सुख रहेगा, सम्मान में वृद्धि होगी। ईश्वर में आस्था होगी। संतान और मित्रों से सुख मिलेगा।

**अंतर्दशा :- शुक्र - शनि
(27/07/2025 - 26/09/2028)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 26/09/2012 को प्रारंभ हुई थी और वद 26/09/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 27/07/2025 को प्रारंभ होकर 26/09/2028 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

एकादश भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 1, 5, 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे। आपके बहुत से कर्मचारी हो सकते हैं, आय उत्तम होगी। सरकारी नौकरी या सरकार के माध्यम से आय संभव है।

आपके मित्रों की संख्या कम हो सकती है मगर समाज में सम्मान मिलेगा। राजनीति में भी भाग ले सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करना श्रेयस्कर होगा;

Astro Ranveer Pratapji Rajpurohit

At. Post fungani Dist. Sirohi (Raj)

7568311880

- पीपल को जल अर्पित करें।
- भोजन करने से पूर्व पहला कौर गाय को दें।
- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।

**अंतर्दशा :- शुक्र - बुध
(26/09/2028 - 28/07/2031)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 26/09/2012 को प्रारंभ हुई थी और वद 26/09/2032 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 26/09/2028 जो आपके लिए 28/07/2031 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव ओर जीवन को खतरों का परिचायक है।

सप्तम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

बुध ज्ञान का कारक है। आप विभिन्न विषयों जैसे ज्योतिष, धर्म, दर्शन आदि का ज्ञानार्जन इस अवधि में कर सकते हैं। आप योग्य, शिष्टाचारी और दक्ष बनेंगे। उत्तम वस्त्र धारण करेंगे। व्यायाम में रुचि के कारण शरीर हृष्ट-पुष्ट रहेगा। चालाकी और धोखेबाजी की भावना मन में आ सकती है, मगर उससे बचना चाहिए। ज्ञान का गलत इस्तेमाल अनुचित है।

अरिष्ट से बचाव और ऊर्जा के सही दिशा में प्रयोग के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।